जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

हे महावीर ! आपकी महानता बाह्य वैभव से नहीं है। वह आपका है भी नहीं, उसे तो आप दीक्षा लेते समय ही पूर्णत: त्याग चुके हैं। आपकी महानता तो अनन्त चतुष्टयरूप अन्तरंग वैभव से है। ह्न ती.महावीर सर्वो.तीर्थ, पृष्ठ : 77

वर्ष : 28, अंक : 2 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (द्वितीय)2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

1. अजमेर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर जिनालय में दि.18 से 25 मार्च तक अष्टपाहुड विधान सानन्द सम्पन्न हुआ।

दिनांक 18 मार्च को दि. जैन मुक्ति मण्डल, मुम्बई की 30 सदस्याओं सहित पधारीं डॉ. वासंती बेन शाह ने ध्वजारोहण किया। विधान का उद्घाटन श्री निखिल गोधा एवं परिवार, मुम्बई ने किया।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर के प्रात: विधान पर, दोपहर में नियमसार एवं रात्रि में समयसार ग्रन्थ पर मार्मिक प्रवचन हुये। विधान के कार्य पं.अभिनय जैन जबलपुर, पं. सुनील धवल भोपाल, श्री हीराचन्दजी बोहरा, मेघा लुहाडिया तथा पिड़ावा की संगीत मंडली ने सम्पन्न कराये।

2. अलवर (राज.) : यहाँ श्री दि. जैन कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री रत्नत्रय दि. जैन मंदिर में पर्व के अवसर पर पण्डित प्रेमचन्दजी जैनदर्शनाचार्य एवं पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में सिद्धचक्र मण्डल विधान सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्राचार्य अरुणकुमारजी शास्त्री, भरतपुर के विधान की जयमाला पर सारगर्भित प्रवचन हुये। प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

3. बारां (राज.) : यहाँ श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में महिला मुमुक्षु मण्डल द्वारा श्री दिग. जैन अग्रवाल चैत्यालय में पर्व के अवसर पर सिद्धचक्र विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पण्डित धरमचन्दजी जैन जयथलवालों के तीनों समय रत्नकरण्डश्रावकाचार पर मार्मिक प्रवचन हुये। विधि-विधान के कार्य भी आपके द्वारा ही सम्पन्न कराये गये।

4. सिद्धायतन (द्रोणगिरि-म.प्र.) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री आचार्य समन्तभद्र संस्थान के छात्रों द्वारा पर्व के अवसर पर विशेष पूजन-पाठ का आयोजन किया गया। साथ ही पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा के मार्मिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

5. उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ जैन मंदिर में श्री नेमिचन्दजी भोरावत की स्मृति में श्री राजेन्द्रजी भोरावत परिवार द्वारा नन्दीश्वर द्वीप विधान का आयोजन हुआ; विधान के कार्य पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा ने सम्पन्न कराये तथा पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा के प्रवचन हुये।

आवेदन पत्र आमंत्रित

आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान, बांसवाड़ा (राज.) का द्वितीय सत्र जुलाई, 05 से प्रारम्भ होने जा रहा है। यहाँ जैनदर्शन विषय से उपाध्याय (कक्षा 11 व 12) व शास्त्री (बी.ए.) की उपाधी प्राप्त कराने के साथ-साथ चारों अनुयोगों का अध्ययन कराया जाता है।

संस्थान में मात्र 10 छात्रों को ही प्रवेश दिया जाना निश्चित है। प्रवेश के इच्छुक छात्र को किसी भी बोर्ड से 10 वीं परीक्षा हिन्दी, संस्कृत, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी विषय लेकर उत्तीर्ण होना आवश्यक है। शास्त्री कक्षा उत्तीर्ण छात्र किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं। यहाँ रहकर छात्रों को पूजन-प्रवचन आदि दैनिक कार्यक्रमों में भाग लेना अनिवार्य है।

प्रवेश इच्छुक छात्र 5/- रुपये का लिफाफा या डाक टिकिट भेजकर निम्नलिखित पते पर सम्पर्क कर सकते है। **आवेदन पत्र मंगाकर जमा कराने की अन्तिम तिथि 15 मई, 05 है।**

पता ह्न पण्डित राजकुमार शास्त्री (निदेशक)
आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान
1/15 खान्दू कॉलोनी, बांसवाड़ा (राज.)

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 6.35 बजे अवश्य सुनें।

साधना चैनल आपके यहाँ न आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से मोबाइल नम्बर 09312506419 पर सम्पर्क करें।

डाक टिकिट भेजकर सत्साहित्य नि:शुल्क मंगा लें

श्रीमद्भागवत कुन्दकुन्दाचार्य प्रणीत नियमसार ग्रन्थ की मुनिराज पद्मप्रभमलधारिदेव कृत समयव्याख्या, प्रवचनसार की आचार्य अमृतचन्द्र कृत तत्त्वप्रदीपिका एवं पंचास्तिकाय ग्रन्थ की समयव्याख्या टीका में समागत कलशों का हिन्दी पद्यानुवाद (मूल श्लोकों एवं अन्वयार्थ सहित) नियमसार कलश, पृष्ठ 241, मूल्य: 10 रुपये, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा लिखी गई क्रमबद्धपर्याय निर्देशिका (डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल कृत 'क्रमबद्धपर्याय' के अध्यापन हेतु सहायक पुस्तक) पृष्ठ 128, मूल्य : 11 रुपये तथा क्रिया-परिणाम और अभिप्राय : एक अनुशीलन, पृष्ठ 103, मूल्य: 10 रुपये।

उक्त तीनों पुस्तकें श्री देवांगभाई और मलयभाई मियामी (यू.एस.ए.) की ओर से मंदिरों, संस्थाओं, त्यागियों, मुमुक्षुओं को स्वाध्यायार्थ नि:शुल्क भेंट दी जा रही है। इच्छुक महानुभाव 6/- के फ्रेश डाक टिकिट भेजकर मंगा लेवें। अन्तिम तिथि 31 मई, 05 है। **पता :** नि:शुल्क साहित्य वितरण विभाग, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

27 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–४२

विगत ४१वीं गाथा में ज्ञानोपयोग के आठ भेदों के साथ अर्थ-ग्रहणरूप शक्ति, पुन: पुन: चिन्तनरूप भावना और जानने के व्यापाररूप उपयोग की चर्चा की तथा अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा और कोष्ठबुद्धि, बीजबुद्धि, पदानुसारी बुद्धि तथा संभिन्न श्रोतृताबुद्धिरूप चार भेद बताये।

अब ४२वीं गाथा में दर्शनोपयोग का स्वरूप और उसके भेद कहते हैं।

दंसणमवि चक्खुजुदं अचक्खजुदमवि य ओहिणा सहियं।
अणिधणमणंतविसयं केवलियं चावि पण्णत्तं ।।४२।।

(हरिगीत)

चक्षु–अचक्षु अवधि केवल दर्श चार प्रकार हैं।
निराकार दरश उपयोग में सामान्य का प्रतिभास है।।

इस गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि दर्शन भी चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन और केवलदर्शन के भेद से चार प्रकार का है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र चारों दर्शनोपयोग की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि आत्मा वास्तव में सर्व अनन्त आत्मप्रदेशों में व्यापक, विशुद्ध दर्शन सामान्यस्वरूप है।

(१) दर्शनोपयोग ह्न आत्मा वास्तव में जो अनादि दर्शनावरण कर्म से आच्छादित प्रदेशों वाला वर्तता हुआ चक्षुदर्शन के आवरण के क्षयोपशम से और चक्षुइन्द्रिय के आलम्बन से मूर्तद्रव्य का विकल्परूप से सामान्यावलोकन करता है, वह चक्षुदर्शन है।

(२) उसीप्रकार के आवरण के क्षयोपशम से तथा चक्षु दर्शन के अतिरिक्त शेष चार इन्द्रियों और मन के अवलम्बन से मूर्त-अमूर्त द्रव्य को विकल्परूप से सामान्यत: अवबोधन करता है, वह अचक्षुदर्शन है।४

(३) उसीप्रकार के आवरण के क्षयोपशम से ही मूर्त द्रव्य को विकलरूप से सामान्यत: अवलोकन करता है, वह अवधिदर्शन है।

(४) समस्त आवरण के अत्यन्त क्षय से आत्मा अकेला मूर्त-अमूर्त द्रव्य को सकलरूप से सामान्यत: अवबोधन करता है, वह स्वाभाविक केवलदर्शन है।

आचार्य जयसेन कहते हैं कि ''यह आत्मा निश्चयनय से अनन्त अखंड एक दर्शनस्वभावी होने पर भी व्यवहारनय से कहें तो संसार अवस्था में निर्मल शुद्धात्मानुभूति के अभाव में उपार्जित कर्म द्वारा झंपित होता हुआ चक्षुदर्शनावरण का क्षयोपशम होने पर और बहिरंग चक्षुरूप द्रव्येन्द्रिय का अवलम्बन होने पर जो मूर्त वस्तु को निर्विकल्प सत्तावलोकन रूप से देखता है, वह चक्षुदर्शन है।

शेष इन्द्रियों और नो इन्द्रिय आवरण का क्षयोपशम होने पर तथा बहिरंग द्रव्य इन्द्रिय और द्रव्य मन का अवलम्बन होने पर जो मूर्त और अमूर्त वस्तु को निर्विकल्प सत्तावलोकनरूप से यथासम्भव देखता है, वह अचक्षुदर्शन है। वही आत्मा अवधिदर्शनावरण का क्षयोपशम होने पर जो मूर्त वस्तु को निर्विकल्प सत्तावलोकनरूप से प्रत्यक्ष देखता है, वह अवधिदर्शन है। रागादि दोषरहित चिदानन्द एक स्वभावी निज शुद्धात्मानुभूति लक्षण निर्विकल्प ध्यान द्वारा निरवशेष सम्पूर्ण केवलदर्शनावरण का क्षय होने पर तीनलोक, तीन कालवर्ती वस्तुओं संबंधी सामान्य सत्ता को एक समय में देखता है, वह अनिधन/अविनाशी, अनन्त विषयवान स्वाभाविक केवलदर्शन है।

कविवर हीरानन्दजी ने चारों दर्शनोपयोगों की परिभाषाओं को छन्द में बांधा है, जो मूलत: पठनीय है।

इसी गाथा के प्रवचन में गुरुदेवश्री कानजी स्वामी कहते हैं कि ''त्रैकालिक आत्मवस्तु में दर्शनगुण भी त्रिकाल है। वह आत्मा के असंख्यात् प्रदेशों में अखण्ड व्यापक होकर रह रहा है। दर्शन का विषय सामान्य है, वह वस्तु का भेद करके नहीं जानता। उस दर्शनोपयोग की चार पर्यायें हैं। १. चक्षुदर्शन, २. अचक्षुदर्शन, ३. अवधिदर्शन, और ४. केवलदर्शन।

चक्षुदर्शन ह्न चक्षुदर्शन का उपयोग अपनी सत्ता में रहकर होता है, परन्तु हीन परिणमन होने से इसमें चक्षुइन्द्रिय निमित्त है। वस्तुत: जीव चक्षु से देखता नहीं है। चक्षुदर्शन का व्यापार जीव स्वतंत्ररूप से अपने अस्तिकाय में करता है। जीव द्रव्य है, दर्शन गुण है और चक्षुदर्शन पर्याय है ह्न इसप्रकार द्रव्य-गुण-पर्याय होकर जीवास्तिकाय का स्वरूप पूरा होता है।

दर्शनोपयोग का कार्य सामान्य अर्थात् भेद किए बिना देखना है। एक ज्ञान का व्यापार होने के पश्चात् और दूसरे ज्ञान का व्यापार होने के पूर्व चेतना का जो सामान्य व्यापार होता है, जिसमें चक्षुनिमित्त है, उस व्यापार को चक्षुदर्शन का व्यापार कहते हैं। छद्मस्थ जीव को दर्शनोपयोग के समय ज्ञानोपयोग नहीं होता और ज्ञानोपयोग के समय दर्शनोपयोग नहीं होता। एक के बाद एक होता है। केवली भगवान को दोनों उपयोग एक साथ होते हैं। आत्मा अखण्ड दर्शन गुण से व्यापक है। उसकी पर्याय में भेद पड़ते हैं।

अचक्षुदर्शन ह्न चक्षु के अलावा चार इन्द्रियों और मन के द्वारा पदार्थों के सामान्य अस्तित्व का ज्ञान होना अचक्षुदर्शन है।

अवधिदर्शन ह्न अवधिज्ञान होने के पूर्व स्वर्ग नरकादि का भेद किए बिना आत्मा से सीधा देखना अवधिदर्शन है।

केवलदर्शन ह्न अनन्त पदार्थों का भेद किए बिना सामान्य प्रकार से देखना केवलदर्शन है। केवली भगवान के केवलदर्शन और केवलज्ञान एकसाथ ही होता है।

भावार्थ का स्पष्टीकरण करते हुए गुरुदेव कहते हैं कि ह्न वस्तुत: चक्षुदर्शन पर्याय आत्मा के दर्शन गुण की है, वह पुद्गल की पर्याय नहीं है, पुदगल के कारण भी नहीं हुई है; क्योंकि प्रत्येक द्रव्य-गुण व पर्यायें पूर्ण स्वतंत्र हैं। ●

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 26

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

कर्मचेतना और कर्मफलचेतना ह्न ये अज्ञान चेतना है, जो चलायमान है एवं अंतर में एक अविचलचेतना विद्यमान है, उसका ज्ञान चिद्विलास है; परन्तु यह क्रियाकाण्ड को छाती से लगाता है; धर्माधर्म में उलझ जाता है, धर्मपत्नी का धर्म, पति का धर्म ह्न ऐसे न जाने कितने धर्म उत्पन्न कर लिए हैं इसने। इसमें असली धर्म का ही पता नहीं चलता।

वह व्यक्ति व्यवहारकुशल है, ऐसा व्यवहार धर्म तो होना ही चाहिए ह्न ऐसे समस्त क्रियाकलाप को यह छाती से लगाता है।

आचार्य कहते हैं कि ऐसा जो मनुष्यव्यवहार है, उसका आश्रय करके यह जीव रागी-द्वेषी होते हुए परद्रव्यरूप कर्म के साथ युक्त होकर वास्तव में परसमय होता हुआ परसमयरूप ही परिणमित होता है।

इससे हम यह समझ सकते हैं कि उस मनुष्यव्यवहार में एकत्वबुद्धि ही मिथ्यात्व है। 'मैं सम्यग्दर्शन हूँ, मैं केवलज्ञान हूँ।' ह्न यह मनुष्यव्यवहार नहीं है। इस कथन से आशय मात्र इतना ही है कि यहाँ अमृतचन्द्राचार्यदेव ने स्वयं पूरा वजन असमानजातीयद्रव्यपर्याय पर ही दिया है।

पण्डित टोडरमलजी ने सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की प्रशस्ति में अपना परिचय इसी विवक्षा से दिया है ह्न

मैं आतम अरु पुद्गल खंध, मिलकर भयो परस्पर बंध।
सो असमानजातिपर्याय, उपजो मानुष नाम कहाय।।

एक आत्मा और अनंत पुद्गल परमाणुओं का पिण्ड है ह्न इनका मिलकर जो संबंध हुआ है; वही असमानजातीयद्रव्यपर्याय है। शास्त्रीय भाषा में इसे असमानजातीयद्रव्यपर्याय कहा जाता है एवं जनभाषा में इसे ही मनुष्य कहा जाता है। ऐसी मनुष्यपर्याय में मैं उत्पन्न हुआ ह्न इसप्रकार पण्डित टोडरमलजी ने स्वयं का परिचय दिया है।

यहाँ रत्नों के दीपक का उदाहरण दिया है; अत: घी वगैरह से युक्त दीपक को यहाँ नहीं समझना चाहिए। रत्नों का दीपक प्रत्येक कमरे में ले गए। जहाँ-जहाँ यह रत्नदीप गया, वह कमरा प्रकाशित हो जाता है।

वहाँ यदि हम कहें कि देखो, यह कमरा कितना प्रकाशित है; तो कहते हैं कि अरे भाई ! प्रकाश तो रत्नदीपक का है, कमरे का अपना कोई प्रकाश नहीं है और २५ कमरों में घूमनेवाला रत्नदीपक तो एक ही है।

ऐसे ही मनुष्यपर्याय, देवपर्याय, नरकपर्याय और तिर्यंचपर्याय ह्न इन सबमें घूमनेवाला एक चैतन्यरूपी रत्नदीपक है। उसमें जो चेतना दिखती है; वह आत्मा की है।

जो प्रकाश दिखाई देता है, वह रत्न का है। समझदार आदमी का ध्यान कमरों पर न होकर, प्रकाश पर होता है, रत्नों पर होता है। जिनका ध्यान रत्नों पर है; रत्नदीपक पर है; वे सम्यग्दृष्टि हैं एवं जिनका ध्यान कमरे पर है; वे मिथ्यादृष्टि हैं।

ऐसे ही मनुष्यादि पर्यायों पर जिनकी दृष्टि है; वे मिथ्यादृष्टि हैं एवं जिनकी दृष्टि 'उसमें घूमनेवाले त्रिकाली ध्रुव पर है', वे सम्यग्दृष्टि हैं। जिसकी आतमा पर दृष्टि है, वह स्वयं को मनुष्य व्यवहार से नहीं जोड़ता हैं; क्योंकि उस मनुष्यव्यवहार में समस्त क्रियाकाण्ड को छाती से लगाया जाता है।

समाज में ऐसे उपदेशक तो बहुत मिलेंगे, जो ऐसा कहते हैं कि जिसे भगवान के दर्शन का भाव नहीं आता है, वह मिथ्यादृष्टि हैं; जिसे पूजन करने का एवं दान देने का विकल्प नहीं आता है, वह मिथ्यादृष्टि है; जो व्रत-उपवास नहीं करता है, वह मिथ्यादृष्टि है।

इसप्रकार जो सम्पूर्ण क्रियाकाण्ड को नहीं करता है; वह मिथ्यादृष्टि है ह्न ऐसे कहनेवाले तो गली-गली में मिल जायेंगे; परन्तु प्रवचनसार की टीका के कर्ता इसे मनुष्यव्यवहार कह रहे हैं एवं जो इसे छाती से लगाता है; वह असमानजातीयद्रव्यपर्याय में एकत्वबुद्धिवाला है; अज्ञानी है, मिथ्यादृष्टि है।

ज्ञानीजनों का व्यवहार ऐसा नहीं होता है। ज्ञानीजनों का व्यवहार तो ऐसा होता है कि वे इस क्रियाकाण्ड को छाती से नहीं लगाते हैं।

क्रियाकाण्ड तो ज्ञानी के भी होता है; उन्हें भगवान के प्रति भक्ति का भाव आता है, दान देने का भाव होता है, जिनवाणी को घर-घर पहुँचाने का भाव आता है ह्न इसप्रकार ये सब भाव ज्ञानी के होते हैं; परन्तु इनमें उसकी रंचमात्र भी एकत्वबुद्धि नहीं है।

'इस क्रियाकाण्ड को करने से मैं धर्मात्मा हो गया' ह्न ऐसा किंचित्मात्र भी विकल्प ज्ञानी को नहीं आता है।

उस समय ज्ञानी के जो आत्मा में एकत्वबुद्धि है, आत्मचेतना-विलासमात्र में एकत्वबुद्धि है, उसमें जो उसे उत्साह है; वह धर्म की क्रिया है, जिसे वह सम्यक्प्रकार से जानता है। वहाँ जो तीव्रता, मंदता होती है, वह उदय के अनुसार होती है।

सम्यग्दृष्टि को समय-समय पर तीव्र और मिथ्यादृष्टि को मंद उदय हो सकता है। कभी मिथ्यादृष्टि को तीव्र व सम्यग्दृष्टि को मंद उदय हो सकता है। इसका संबंध अंतर में आत्मा में एकत्वबुद्धिरूप सम्यग्दर्शन से नहीं है; वह जैसा उदयानुसार होता है, वैसा होता है।

इसे भावार्थ में और अधिक सरलता से स्पष्ट किया है ह्न

''मैं मनुष्य हूँ, शरीरादिक की समस्त क्रियाओं को मैं करता हूँ, स्त्री-पुत्र-धनादिक के ग्रहण-त्याग का मैं स्वामी हूँ।' इत्यादि मानना सो मनुष्यव्यवहार है, 'मात्र अचलित चेतना ही मैं हूँ'' ऐसा मानना-परिणमित होना सो आत्मव्यवहार है।'

इसप्रकार आचार्यदेव ने वजन 'असमानजातीय द्रव्यपर्यायवाले परसमय हैं।' पर ही दिया है। **(क्रमश:)**

कृपया ध्यान दें !

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा नवीन प्रकाशित साहित्य सभी ग्रन्थमाला सदस्यों को नि:शुल्क भेजी जा चुकी है। जिन सदस्यों को अभी तक भी पुस्तकें प्राप्त नहीं हुई हो, वे तत्काल पत्र द्वारा सूचित करें। यदि आपके पते में कोई परिवर्तन हो गया हो तो भी सूचित करें।

ज्ञातव्य है कि सभी सदस्यों को प्रवचनसार अनुशीलन, योगसार प्राभृत, शलाकापुरुष उत्तरार्द्ध, अध्यात्म नवनीत, ऐसे क्या पाप किये एवं प्रवचनसार पद्यानुवाद नामक पुस्तकें भेजी भेजी गई है। - प्रकाशन विभाग,

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वैराग्य समाचार

1. **इन्दौर निवासी** डॉ. राजेश जैन की धर्मपत्नी स्वनामधन्य श्रीमती सन्तोष देवी जैन ने इस नश्वर देह को दिनांक 14 फरवरी, 2005 को अत्यन्त समतापूर्वक त्याग दिया।

आपने 12 वर्ष पूर्व 13 फरवरी 1993 को श्रवण बेलगोला में सल्लेखना व्रत अंगीकार किया था; जिससे ठीक 12 वर्ष बाद ही इस नश्वर शरीर का त्याग कर देवलोक गमन हुआ।

वे इस व्रत का अनुपालन उत्साह एवं प्रसन्नचित्त से करती रहीं तथा उन्होंने देव-शास्त्र-गुरु की सच्ची समझपूर्वक अपने जीवन की समस्त चर्याओं को उज्ज्वल बनाये रखा। उनके सुपुत्र मुकेश जैन का इस भौतिकवादी युग में अपनी माताजी के चरण चिन्हों पर चलना यह दर्शाता है कि उन्होंने अपने पुत्रों पर कितना अमिट प्रभाव छोड़ा है। अन्तिम समय में अरहंत-सिद्ध के अनवरत उच्चारण सहित पूर्ण जागृत अवस्था में आपका देहावसान हुआ। धर्मप्राण पति राजेश जैन, पुत्र मुकेश एवं शैलेश आदि सभी ने चारों प्रकार के दान में कुल 1 करोड़, 11 लाख, 11 हजार, 111 रुपये की न्योछावर राशि समाज एवं धर्म को समर्पित करने की घोषणा की।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक को संरक्षक के रूप में पाँच हजार रुपये तथा वीतराग-विज्ञान को परम संरक्षक के रूप में 11 हजार रुपये प्राप्त हुये हैं।

2. **बजाजनगर-जयपुर निवासी** कु. रवीना जैन (नन्नी) सुपुत्री डॉ. रवी-प्रमिला जैन का दिनांक 12 फरवरी, 05 को 17 वर्ष की अल्पायु में दुर्घटना (रोड एक्सिडेन्ट) होने से देहावसान हो गया है।

आपकी स्मृति में आपके दादाजी श्री पदमचन्दजी जैन कठूमरवालों की ओर से जैन पथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 501/- रुपये प्राप्त हुए।

3. **कलकत्ता निवासी** श्री फूलचन्दजी, राजमलजी, भागचन्दजी, कमलकुमारजी पाटनी की माताजी श्रीमती सोनीदेवी पाटनी का दिनांक 31 मार्च, 2005 को 102 वर्ष की आयु में अत्यन्त शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप सरलस्वभावी, स्वाध्यायप्रिय एवं धार्मिक महिला थीं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों यही मंगल भावना है।

आवश्यकता ...

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट द्वारा दिनांक 10 मई,05 से महाराष्ट्र में तत्त्वप्रचार-प्रसार के उद्देश्य से रथ का प्रवर्तन किया जा रहा है; जिसके लिये मराठी एवं हिन्दी भाषा जाननेवाले विद्वान की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। दिनांक 5 मई, 05 तक सम्पर्क करें।

ह्न अनंतभाई शेठ, श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट,
173-75 मुम्बादेवी रोड, मुम्बई। फोन- 23425241

राजस्थान दिवस पर स्वर्ण पदक से सम्मानित

जयपुर (राज.) : यहाँ के प्रसिद्ध सुलतान हाउस के विशाल प्रांगण में राजस्थान दिवस की पूर्व संध्या पर श्री शारदा पीठाधीश्वर सीतारामदासजी महाराज की अध्यक्षता तथा राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश माननीय श्री करणीसिंहजी राठौड के आतिथ्य में राष्ट्रीय समता स्वतंत्र मंच द्वारा श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धा. महाविद्यालय के स्नातक डॉ. विमलकुमारजी जैन को उनके सामाजिक, धार्मिक, पत्रकारिता एवं साहित्यिक क्षेत्र में शोधपूर्ण कार्य एवं उल्लेखनीय सेवाओं के लिये समरसता स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मान में स्वर्ण पदक, प्रशस्ति-पत्र एवं नकद राशि प्रदान की गई।

इसी अवसर पर डॉ. जैन की मौलिक कृति अरुणोदय एवं मां के अंचल से का विमोचन किया गया। आपने अब तक 35 पुस्तकों का लेखन व सम्पादन किया है, साथ ही आप ॐ ज्योति पुंज मासिक पत्रिका के सफल सम्पादक भी है। ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व राजस्थान सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में तथा भारत के विभिन्न नगरों में आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

आपकी उपलब्धियों के लिये जैनपथ प्रदर्शक समिति की ओर से बधाई !

आगामी कार्यक्रम ....

बीना (सागर-म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में दिनांक 23 से 28 अप्रैल,05 तक क्रमबद्धपर्याय शिक्षण-शिविर पंचपरमेष्ठी विधान एवं वेदी शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न होने जा रहा है। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, बा.ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा।

समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के सान्निध्य में सम्पन्न होंगे।

- निवेदक -
सकल दि. जैन समाज, बीना (म.प्र.)

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अप्रैल (द्वितीय) 2005
J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127